पाठ – गिरगिट

लेखक – अंतोन चेखब

पाठ – प्रवेश

अच्छी शासन व्यवस्था वही होती है जो सबको समान दृष्टि से देखती है। अन्यायी और उसके अन्याय को न्याय के तराजू पर ही तौलती है। ऐसी शासन व्यवस्था जन-जन में कानून के प्रति आदर और समर्पण का भाव ही जगाती है।निर्भयता की भावना भी पैदा करती है।ऐसी शासन व्यवस्था तभी कायम हो सकती है जब शासन की बागडोर सँभालने वाले पक्षपात किए बिना , अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों का पालन करें।जब वे अपना काम सही तरीके से नहीं करते तब देश में अराजकता फैलती है।

१८८४ में लिखी गई प्रस्तुत कहानी में रूस के महान लेखक ‘अंतोन चेखव ’ ने एक ऐसे अवसर का वर्णन किया है जब जारशाही शासन चापलूसों ,भाई – भतीजावाद को मानने वाले अधिकारियों के भरोसे चल रहा था। नतीजा यह था कि न्यायोचित फ़ैसला नहीं कर पाते थे जिसमें दोषी चाहे मनुष्य हो या कोई कुत्ता ही क्यों न हो।

जिस प्रकार गिरगिट शत्रु से स्वयं को बचाने के लिए अपने आस-पास के परिवेश के अनुसार रंग बदल लेता है , उसी प्रकार कई व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए परिस्थितियों के अनुसार अपनी बात, व्यवहार, दृष्टिकोण , विचार को बदल लेते हैं ।यही कारण है कि ऐसे व्यक्तियों को ‘ गिरगिट ’ कहा जाता है ।

पुलिस इंसपेक्टर ओचुमेलाव नया ओवरकोट पहने हुए बाज़ार के चौराहे से गुज़रा । उसके पीछे अपने हाथों में ज़ब्त की गई झरबेरियों की टोकरी उठाए लाल बालों वाला एक सिपाही चला आ रहा था । चारों ओर ख़ामोशी थी......चौराहे पर किसी आदमी का निशान तक नहीं था।

अचानक ओचुमेलाव के कानों में एक आवाज़ गूँजी – तो तू मुझे काटेगा? शैतान कहीं का ! ओ छोकरे ! पकड़ो इस कुत्ते को.. जाने न पाए।

तभी किसी कुत्ते के किकियाने की आवाज़ सुनाई दी। ओचुमेलाव ने देखा कि काठ गोदाम में से एक कुत्ता तीन टाँगों के बल रेंगता हुआ चला आ रहा है। एक व्यक्ति कुत्ते के पीछे दौड़ रहा था। गिरते-पड़ते उसने कुत्ते को पिछली टाँगों से पकड़ लिया। तभी एक भीड़ काठगोदाम को घेरकर खड़ी हो गई।

ओचुमेलाव ने देखा– कुत्ते के पीछे भागने वाला आदमी वहाँ लोगों को अपनी लहूलुहान उँगली दिखा रहा था।ओचुमेलाव ने इस आदमी को पहचान लिया। वह **ख्यूक्रिन** नामक सुनार था। पास ही कुते का पिल्ला ऊपर से नीचे तक काँपता पसरा पड़ा था। उसकी आँखों में संकट और आतंक की गहरी छाप थी।

ओचुमेलाव – क्या कर रहे हो सब? चिल्ला कौन रहा था? तुमने अपनी उँगली क्यों उठा रखी है?

ख्यूक्रिन- हुज़ूर, मैं काठगोदाम से लकड़ी लेने गया था। इस कुत्ते ने अकारण ही मेरी उँगली काट खाई। अब मैं एक हफ़्ते तक काम करने के लायक नहीं रहा । इसके मालिक से मुझे हरजाना दिलवाया जाए।

ओचुमेलाच- हूँ..ठीक है , यह किसका कुत्ता है? मैं इसे छोड़ने वाला नहीं हूँ । कुत्तों को इस तरह आवारा छोड़ देने का मज़ा मैं इनके मालिकों को चखाकर रहूँगा। उस बदमाश आदमी पर मैं जुर्माना ठोकूँगा। येल्दीरीन , पता लगाओ ,यह किसका पिल्ला है?

“ मेरे ख्याल से यह जनरल झिगालाव का कुत्ता है” , भीड़ से एक आवाज़ आई।

ओचुमेलाव – “ एक बात मेरी समझ में नहीं आती- आखिर इसने तुम्हें काटा कैसे? यह तुम्हारी उँगली तक पहुँचा कैसे? तू इतना लम्बा-तगड़ा आदमी और यह रत्ती भर का जानवर! जरूर तेरी उँगली पर कील वगैरह गड़ गई होगी और तूने सोचा होगा कि इसे कुत्ते के मत्थे मढ़कर कुछ फ़ायदा उठा लिया जाए।”

येल्दीरीन – “इसने अपनी जलती सिगरेट से इस कुत्ते की नाक जला दी होगी,हुजूर! वरना यह कुत्ता बेवकूफ़ है जो इसे काट खाता! मैं जानता हूँ ये ख्यूक्रिन कोई न कोई शरारत करता रहता है।“

ख्यूक्रिन – “अबे, ओ काने की औलाद ! तूने मुझे यह सब करते देखा ही नहीं तो झूठ – मूठ में सब क्यों बके जा रहा है? मैं अगर झूठ बोलता हूओ~म तो मुझ पर अदालत में मुकदमा ठोक दो। वैसे मेरा एक भाई भी पुलिस में है।”

ओचुमेलाव – “ बकवास बन्द करो !”

येल्दीरीन – “ नहीं यह जनरल साहब का कुत्ता नहीं है। उनके तो सभी कुत्ते पोंटर हैं।”

ओचुमेलाव – “ तुम सही कहते हो। जनरल साहब के सभी कुत्ते महँगे और अच्छी नस्ल के हैं , और यह कितना भद्दा और मरियल – सा पिल्ला है।कोई सभ्य आदमी ऐसा कुत्ता काहे को पालेगा? यदि इस तरह का कुत्ता मस्को या पीटर्सबर्ग में दिख जाता तो कानून की परवाह किए बिना इसकी छुट्टी कर दी जाती। तुझे इसने काट खाया है, इसे ऐसे मत छोड़ देना।इसे हर हालत में मज़ा चखाना जरूरी है। ”

येल्दीरीन – { गंभीरता से} शायद यह जनरल साहब का ही कुत्ता है। कल ही मैनें बिलकुल इसी तरह का एक कुत्ताउनके आँगन में देखा था।
" हाँ , यह जनरल साहब का ही है,..भीड़ में से एक आवाज़ आई।
ओचुमेलाव - इस कुत्ते को जनरल साहब के पास ले जाओ और उनसे कहना कि यह मुझे मिला और मैंने इसे वापस उनके पास भेजा है। लगता है , यह काफ़ी महँगा प्राणी है। यदि हर गुन्दा- बदमाश इसकी नाक में जलती सिगरेट घुसड़ने लगे तो यह तबाह ही हो जाएगा। तुम्हें मालूम है कुत्ता कितना नाज़ुक प्राणी है। और तू अपना हाथ नीचे कर बे ! गधा कहीं का।अपनी इस भद्दी उँगली को दिखाना बंद कर। यह सब तेरी अपनी गलती है।

येल्दीरीन – " उधर देखो , जनरल साहब का बावर्ची आ रहा है। ज़रा उससे पता लगाते हैं...ओ प्रोखोर ! इधर आना भाई। इस कुत्ते को तो पहचानो ..क्या यह तुम्हारे यहाँ का है?

प्रोखोर – इस तरह का पिल्ला तो हमने कई ज़िंदगियों में नहीं देखा होगा।

ओचुमेलाच – अब अधिक जाँचने की ज़रूरत नहीं है। यह आवारा कुत्ता है।इसे मार डालो और सारा किस्सा खत्म।

प्रोखोर – यह हमारा नहीं है।यह तो जनरल साहब के भाई का है,जो थोड़ी देर पहले इधर पधारे हैं। अपने जनरल साहब को 'बारजोयस' नस्ल के कुत्तों में कोई दिलचस्पी नहीं है पर उनके भाई को यही नस्ल पसंद है।

ओचुमेलाव – क्या ? क्या जनरल साहब भाई पधार चुके हैं? वाल्दीमीर इवानिच? कितना अद्‌भुत संयोग रहा और मुझे मालूम तक नहीं अभी कुछ दिन रुकेंगे ?

प्रोखोर – हाँ ! यह सही है।

ओचुमेलाव – तनिक सोचो ! वे अपने भाई साहब से मिलने पधारे हैं और मैं इतना भी नहीं जानता। तो यह उनका कुत्ता है। बहुत खुशी हुई... इसे ले जाइए.।

ओचुमेलाव – यह तो एक अति सुन्दर डॉगी है। यह उसकी उँगली पर झपट पड़ा था ? हा-हा-हा ! बस- बस ! अब काँपना बन्द कर भाई ! नन्हा-सा शैतान गुस्से में है...बहुत खूबसूरत पिल्ला है।

प्रोखोर कुत्ते को सँभालकर काठगोदाम से बाहर चला गया। भीड़ ख्यूक्रिन की हालत पर हँस दी।

" मैं तुझे अभी ठीक करता हूँ "- ओचुमेलाव ने उसे धमकाया और अपने रास्ते पर चला गया।